विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

परीक्षाएं चार, छात्रों पर अत्याचार

आज यह संपादकीय, मैं, दुख और आक्रोश के मिश्रित भाव से लिख रहा हूं । गत एक माह से भारत के छात्रों के साथ जिस प्रकार का संवेदनहीन व्यवहार, भारत सरकार का रहा है, वह अक्षम्य है। मई माह में कुल चार परीक्षाएं आयोजित की गईं, जिनमें कुल 1.12 करोड़ छात्रों ने परीक्षा दी। प्रत्येक परीक्षा ने परीक्षार्थियों को उलझन, असमंजस और परेशानी के अलावा कुछ नहीं दिया।

3 मई, 2026 को मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश के लिए NEET, एन टी ए अर्थात नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा आयोजित की गई। इसमें 23 लाख विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। उल्लेखनीय है कि NEET की तैयारी और कोचिंग पर छात्र दो तीन साल मेहनत करते हैं और लगभग एक दो लाख रुपए खर्च भी करते हैं। इस परीक्षा के प्रश्न पत्र लीक होने की बात सामने आने पर एन टी ए ने 12 मई को इस परीक्षा को निरस्त कर दिया। उल्लेखनीय है कि 2024 में भी इसी परीक्षा का पेपर लीक हुआ, किंतु सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयानुसार कुछ ही केंद्रों पर परीक्षा दुबारा ली गई। इसके बावजूद एन टी ए के अध्यक्ष पी के जोशी को हटाया तक नहीं गया। बार-बार पेपर लीक होना केवल शिक्षा मंत्रालय एवं शिक्षा मंत्री की अक्षमता को ही उजागर कर रहा है।

अब तो खबर यहां तक आ रही है कि NEET कराने का काम स्वयं प्रधानमंत्री की देख-रेख में होगा। इसके लिए सेना के हवाई जहाजों का भी उपयोग किया जाएगा। क्या यह विडंबना नहीं है कि शिक्षा मंत्रालय के लवाजमे पर हजारों करोड़ रुपये खर्च होने के बाद भी परीक्षाएं कराने का काम ठीक से नहीं हो पा रहा है। यदि वास्तव में यह स्थिति आ गई है तो फिर शिक्षा मंत्री के अपने पद पर रहने का क्या औचित्य है? उनका इस्तीफा अब तक क्यों नहीं लिया गया? क्यों नहीं एनटी ए के अध्यक्ष को अभी तक बर्खास्त किया गया? शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने इस घटना के कई दिन बाद अपनी गलती मानी किंतु त्यागपत्र फिर भी नहीं दिया। नीट की परीक्षा की नई तारीख 21 जून 2026 को रखी गई है, किंतु सभी विद्यार्थी इसी आशंका में मानसिक अवसाद से ग्रस्त हो रहे हैं कि अगली परीक्षा में पेपर लीक नहीं होगा, इसकी क्या गारंटी है? इस प्रकार की मन:स्थिति में कोई भी छात्र, किस प्रकार से अपनी तैयारी करके अपनी श्रेष्ठतम प्रतिभा का प्रदर्शन परीक्षा के दौरान कर पाएगा? आश्चर्य की बात यह है कि संसदीय समिति के सम्मुख उपस्थित एन टी ए और शिक्षा विभाग के अधिकारी ने पेपर लीक होने से ही इनकार कर दिया।

इसी प्रकार, सीबीएसई की 12वीं की परीक्षा के मूल्यांकन में अनेक प्रकार की धांधलियों की बात सामने आ रही है । पहली बार, सीबीएसई ने OSM अर्थात ऑन स्क्रीन मार्किंग की व्यवस्था को लागू किया। इसके फलस्वरुप अनेक विद्यार्थियों की कॉपियां अच्छी तरह स्कैन नहीं हुई और परीक्षकों का उपयुक्त प्रशिक्षण नहीं होने के कारण मूल्यांकन भी सही तरह नहीं हो पाया । स्कैन्ड कॉपियों से यह भी पता लगा कि मुख्य पृष्ठ किसी एक बच्चे का था तो अंदर की सारी कॉपी किसी दूसरे बच्चे की थी। कई बच्चों की कॉपी में कई प्रश्न जंचने से रह गए । यहां यह उल्लेखनीय है कि जिस कंपनी को OSM का काम दिया गया, उसे तेलंगाना सरकार द्वारा बहुत पहले ही ब्लैक लिस्ट कर दिया गया था । न केवल यह, सीबीएसई ने स्वयं भी 2017-18 में प्रायोगिक तौर पर इसे लागू किया था किंतु इसकी असफलता को देखते हुए एवं इसकी कठिनाइयों को देखते हुए इसे बाद में लागू नहीं किया।

12वीं का परिणाम विद्यार्थियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस पर यह निर्भर करता है कि उसे किस पाठ्यक्रम में एवं किस कॉलेज में प्रवेश मिल पाएगा? कई विद्यार्थी ऐसे भी होंगे जिन्होंने आईआईटी और नीट की परीक्षा दी है और संभवताया उसमें उत्तीर्ण भी हो जाएं, किंतु यदि सीबीएसई की अक्षमता के कारण उनके 75 प्रतिशत से कम अंक आए हैं, तो वे इनमें प्रवेश पाने से वंचित रह जाएंगे। इस बारे में सरकार का क्या निर्णय रहेगा, अभी तक यह स्पष्ट नहीं किया गया है ।

दुर्भाग्य की बात यह है कि प्रधानमंत्री जो बच्चों को परीक्षाओं की तैयारी के लिए कई बार 'मन की बात' में संबोधित करते रहे हैं, वे विद्यार्थियों को इस संकट के समय में, सांत्वना देने एवं उन्हें सही दिशा दिखाने के लिए अभी तक संबोधित करने के लिए समय नहीं निकाल पाए हैं।

इन सभी व्यवस्थाओं का मुख्य कारण जवाबदेही का नितांत अभाव है। ब्लैकलिस्टेड कंपनी को इतना महत्वपूर्ण गोपनीय काम दिया जाना, भ्रष्टाचार की आशंका को बल देता है। 12वीं की परीक्षा कोपियों के लगभग 40 करोड़ पृष्ठों का स्कैनिंग किया गया था। इस के लिए करोड़ों रुपए कंपनी को दिए गए होंगे। पाठकों के लिए यह जानना दिलचस्प होगा कि संघ लोक सेवा आयोग अर्थात् यूपीएससी का अपना स्वयं का प्रिंटिंग प्रेस है और वहां सारा गोपनीय काम, उसके स्थाई कर्मचारी करते हैं। इसी कारण वहां पर किसी प्रकार के पेपर लीक की घटनाएं अभी तक सामने नहीं आई हैं । सर्वोच्च न्यायालय ने भी सुनवाई के दौरान यूपीएससी से सीख लेने हेतु एनटीए को नसीहत दी है, किंतु यह सब तब उपयोगी है जब किसी के मन में लेशमात्र भी संवेदनशीलता बची हो। अब तो लोग एन टी ए को "नेशनल टॉर्चर एजेंसी" और "नेवर ट्रस्ट एजेंसी" तक कहने लगे हैं।

मीडिया से प्राप्त समाचार के अनुसार नीट पेपर लीक प्रकरण में पेपर सैटर्स की लगातार गिरफ्तारियां हो रही हैं । समस्या यह है कि ये सब शतरंज के खेल में केवल प्यादे हैं, इनका खिलाड़ी तो कोई और है। सवाल यह है कि उस तक पहुंच कर, बिल्ली के गले में घंटी बांधे कौन? जब तक शिक्षा मंत्री, एनटीए और सी बी एस ई के अध्यक्षों को हटाया जाकर उनके विरुद्ध आपराधिक प्रकरण दर्ज नहीं किया जाएगा, तब तक इस बारे में निष्पक्ष जांच होना संभव नहीं है।

SSC (GD) परीक्षा जो कांस्टेबलों की भर्ती के लिए आयोजित होती है, में 52 लाख अभ्यर्थियों ने आवेदन किया । इनमें से कई ,जब केंद्र पर परीक्षा देने गए तो उत्तर प्रदेश के कई केंद्रों पर यह पता चला कि केंद्र पर जितने लोगों के बैठने की व्यवस्था है, उससे कहीं अधिक लोगों को उस केंद्र के लिए प्रवेश पत्र जारी कर दिया गया है। परिणाम यह हुआ कि उन केंद्रों पर हुड़दंग मच गया और परीक्षा निरस्त करनी पड़ी । अब शायद किसी अन्य तिथि को वहां पर परीक्षा होगी। एक ही भर्ती के लिए यदि अलग-अलग तरह के पेपर के आधार पर परीक्षा आयोजित होगी तो उनकी तुलनात्मक योग्यता सूची कैसे तैयार होगी यह स्पष्ट नहीं है। एक ओर जहां हम तकनीकी के क्षेत्र में बहुत प्रगतिशील होने का दावा करते हैं और स्वयं को विश्व गुरु कहलाते हुए नहीं थकते, वहीं दूसरी ओर यदि परीक्षा केंद्रों का आवंटन और परीक्षाओं के साधारण संचालन का काम भी ढंग से नहीं कर पाते हैं, तो फिर ये दावे खोखले प्रतीत होते हैं। इतने लाखों बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने वाली सरकार को इस पर विचार करना चाहिए कि वह केवल युवाओं के भविष्य के साथ ही नहीं अपितु देश के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है । इसके बावजूद भी यदि युवा आक्रोशित होकर सड़कों पर कोई बड़ा आंदोलन नहीं करते हैं, तो इसे सरकार को अपने खुशकिस्मती माननी चाहिए।

मीडिया से प्राप्त समाचार के अनुसार नीट पेपर लीक प्रकरण में पेपर सैटर्स की लगातार गिरफ्तारियां हो रही हैं । समस्या यह है कि ये सब शतरंज के खेल में केवल प्यादे हैं, इनका खिलाड़ी तो कोई और है। सवाल यह है कि उस तक पहुंच कर, बिल्ली के गले में घंटी बांधे कौन? जब तक शिक्षा मंत्री, एनटीए और सी बी एस ई के अध्यक्षों को हटाया जाकर उनके विरुद्ध आपराधिक प्रकरण दर्ज नहीं किया जाएगा, तब तक इस बारे में निष्पक्ष जांच होना संभव नहीं है।

जैसा कि मैंने इसी विषय पर एक संपादकीय में लिखा था कि नीट की परीक्षा से जुड़े कोचिंग संस्थानों की कमाई हजारों करोड़ रुपए की होती है। यह राशि इतनी बड़ी है कि इससे किसी को भी खरीदा जा सकता है।

वास्तव में पेपर लीक का कार्य एनटीए के अंदर के लोगों द्वारा ही कराया जाता है । इसे किस प्रकार रोका जाएगा, इसकी कोई बात नहीं की जा रही है। यदि विमान से पेपर भेजने की व्यवस्था की जाएगी तो ऐसा कितनी परीक्षाओं में किया जाना संभव होगा? वैसे भी पेपर लीक, परिवहन में नहीं अपितु एन टी ए के अंदर से होते हैं।

इस प्रकार की सड़ी गली, भ्रष्ट व्यवस्था से जो डॉक्टर बनेंगे, वे किस प्रकार से मरीजों का इलाज करेंगे और कैसे उन्हें लूटने का काम करेंगे, इसके कुछ नमूने तो हम आजकल भी देख रहे हैं। गलत तरीके अपनाकर मेडिकल कॉलेज में प्रवेश पाने वाले छात्रों का प्रवेश निरस्त क्यों नहीं किया जाता है?

सरकार अपनी गलती स्वीकार करने के बजाय अपनी व्यवस्थाओं को अच्छा बताने की दृष्टि से लगातार विद्यालयों के प्राचार्यों से रटे-रटाए बयान के वीडियो रील कर बनवा कर सोशल मीडिया पर प्रसारित करवा रही है। ऐसा करके सरकार, छात्रों के घावों पर नमक छिड़कने का ही काम रही है।

देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों में प्रवेश हेतु एनटीए द्वारा ही सी यू ई टी (कंबाइंड यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट) का आयोजन 30 मई को किया गया था, जिसमें लगभग 15 लाख विद्यार्थियों ने परीक्षा के लिए अपने आप को पंजीकृत कराया था। इस परीक्षा मको डिजिटल सिस्टम से कराना तय किया गया था। कई सेंटरों पर सर्वर डाउन होने के कारण 7:00 बजे के शिफ्ट वाले बच्चों को 12:00 बजे तक बिठाये रखा गया और बिना परीक्षा के भेज दिया गया। बाद में एन टी ए के द्वारा उनके पास संदेश भेजा गया कि उनकी परीक्षा उसी दिन होगी। कई बच्चों को केंद्र से बाहर निकाल दिया गया। बच्चे इधर-उधर भटकते रहे, कभी सर्वर डाउन होने के नाम पर, कभी तकनीकी खराबी आने के नाम पर। कोई स्पष्ट उत्तर देने वाला जिम्मेदार व्यक्ति सेंटर पर उपलब्ध नहीं था।

युवाओं में पनप रहे इसी क्षोभ और आक्रोश की परिणति, कॉकरोच जनता पार्टी नाम के आंदोलन के रूप में हुई, जिससे एक सप्ताह में ही ढाई करोड़ लोग जुड़ गए थे। लगता है, सरकार ने अभी तक भी युवाओं के आक्रोश को सही तरह भांपने का प्रयास नहीं किया है और केवल रक्षात्मक मुद्रा अपनाने में और अपनी स्वयं की पीठ थपथपाने में ही लगी रही है । यह स्थिति अधिक समय तक चलना न सरकार के हित में है, न छात्रों के और न ही देश के हित में है। सरकार को तत्काल स्थिति की गंभीरता को समझ कर उपयुक्त उपचारात्मक कदम उठाने चाहिएं।

संक्षेप में, हम गत एक माह की घटनाओं के बारे में फिलहाल यही कह सकते हैं "परीक्षा चार, छात्रों पर अत्याचार"।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

"वसुधैव कुटुंबकम् को चरितार्थ करने का समय आ गया है : चमत्कार नहीं, कर्म से होगा उद्धार"

मदन सिंह काला

-महोपनिषद का महान श्लोक: "अयं निज: परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।" - अर्थात् यह मेरा है, यह पराया है, ऐसी सोच छोटे मन वालों की है। उदार चरित्र वालों के लिए तो पूरी पृथ्वी ही एक परिवार है।-

सब मनुष्यों की एक ही जाति है और वह है 'मानव'। 600 साल पहले संत कबीर ने सिकंदर लोदी के राजतंत्र जैसे शासन काल में इस सत्य को उजागर करते हुए महोपनिषद के वसुधैव कुटुंबकम को सरल भाषा में समझाया। उस समय मुसलमान और ब्राह्मण अपने-आपको ही धर्म-जाति के अहंकार में खुद को महान समझते थे। उन्हीं के विवेक को जगाने के लिए कबीर ने आमजन की भाषा में ये दोहे कहे:

-"एक बूंद एक मलमूत्र, एक चाम एक गुदा। एक जोत से सब उत्पन्ना, को बामन को सूदा।।" अर्थात सब इंसान एक ही तरह की बूंद (वीर्य) से पैदा होते हैं, सबका मल-मूत्र एक-सा है, सबकी चमड़ी-शरीर की बनावट एक-सी है, सबमें प्राण-ज्योति भी एक ही है। फिर यह ब्राह्मण कौन और शूद्र कौन? आज तो अंतर्जातीय, अंतर्देशीय और अंतरधार्मिक विवाह हो रहे हैं। उनसे बच्चे भी पैदा हो रहे हैं - यह प्रकृति की ओर से सबसे बड़ा प्रमाण है कि मनुष्य की जाति एक ही है।

-"जो तूं बाम्हन बाम्हनी जाया, तो आन बाट काहे नहीं आया। जो तूं तुरूक तुरकनी जाया, तो भीतर खतना क्यों न कराया।।" अर्थात पैदा होते समय न कोई जनेऊ पहनकर आता है, न खतना कराकर। जाति-धर्म सब बाद में लादे गए लेबल हैं। असली पहचान तो सिर्फ 'इंसान' है।

कबीर का यह विज्ञान 600 साल पहले का है, और आज का DNA विज्ञान भी यही कहता है - दुनिया के किसी भी कोने का इंसान, किसी भी धर्म का इंसान, 99.9 जीन एक जैसे हैं। खून का रंग सबका लाल है। इसलिए लड़ाई 'हिंदू-मुस्लिम' की नहीं, 'इंसान बनाम अज्ञान' की है। संत कबीर द्वारा उजागर की गई इस सच्चाई को भारत के संविधान में भी समाहित किया जा चुका है।

आज 2026 में इस धरती पर लगभग 8.2 अरब इंसान साँस ले रहे हैं। रंग, भाषा, देश अलग हैं, पर भूख, दर्द, मृत्यु का डर और सुख की चाह सबकी एक है। मनुष्य ने 4300 से अधिक धर्म, पंथ, सम्प्रदाय रचे। सवाल यह नहीं कि धर्म कितने हैं, सवाल यह है कि धर्म का इस्तेमाल कौन, कैसे कर रहा है। जब धर्म मंदिर-मस्जिद-चर्च में रहता है तो वह प्रार्थना है, करुणा है। पर जब वही धर्म संसद, चुनावी मंच और टीवी डिबेट में पहुँचता है तो वह वोट-बैंक, दंगा और भेदभाव बन जाता है। धर्म की राजनीति से जनता को आज तक न रोटी मिली, न दवा, न स्कूल। मिला तो सिर्फ पड़ोसी से नफरत का स्थायी लाइसेंस। इसलिए पहला संकल्प यह हो कि धर्म को घर और दिल तक सीमित रखो, उसे गली और सरकार तक मत ले जाओ।

दुनिया बदल चुकी है। आज हर हाथ में विज्ञान है - मोबाइल, दवाई, बिजली, इंटरनेट। फिर भी अप्रमाणिक मान्यताएँ क्यों नहीं छूटतीं? क्योंकि हमें विज्ञान क्यों बताता है, कैसे नहीं। वसुधैव कुटुंबकम संप्रदाय, जातिविहीन तथा चमत्कार नहीं, कर्म से उद्धार वाली सोच का समाज बनाने की बात कहता है। डॉक्टर बता देगा कि कैंसर कैसे हुआ, पर 'मुझे ही क्यों' का जवाब मरीज गीता, कुरान, बाइबिल में खोजता है। घ्ण्ळ के बाहर खड़ा पिता विज्ञान पर भरोसा करता है, पर साथ में हनुमान चालीसा भी पढ़ता है। यह पाखंड नहीं, मानवीय लाचारी है।

वर्तमान विश्व राजनीति भी यही सबक दे रही है। अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच चल रहा तनाव भी यही संदेश दे रहा है कि 21वीं सदी में वही देश निर्णायक शक्ति बने हैं जिन्होंने वैज्ञानिक सोच, तकनीक, शिक्षा और आर्थिक सम्पन्नता को नंबर-1 पर रखा। इजरायल का आयरन डोम किसी चमत्कार की देन नहीं, दशकों की रिसर्च का परिणाम है। अमेरिका की शक्ति उसकी प्रयोगशालाओं, सेमीकंडक्टर, AI से आती है। दूसरी ओर, जहाँ शासन का आधार सिर्फ अंधविश्वास और 'ऊपरवाला देख लेगा' वाली सोच है, वहाँ गरीबी और युद्ध ही मिलते हैं। चमत्कार से मिसाइल नहीं रुकती, सैटेलाइट नहीं बनता। सम्मान तर्क, तकनीक और उत्पादन से मिलता है, भाषणों और ताबीज से नहीं। इसलिए हर समाज को चुनना होगा - बच्चों के हाथ में किताब देंगे या सिर्फ माला?

-200 साल पहले दुनिया और भारत :- विज्ञान के बिना इंसान की असली हालत-

आज से ठीक 200 साल पहले, 1820 में दुनिया की आबादी सिर्फ 100 करोड़ थी। आज 820 करोड़ हैं। उस समय भारत और चीन में 50-60 करोड़ लोग थे, पर सुखी नहीं थे।

1757 प्लासी के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत को कच्चे माल का सप्लायर बना दिया। दादाभाई नौरोजी के अनुसार हर साल भारत की कुल कमाई का 6-8 प्रतिशत हिस्सा 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' के रूप में इंग्लैंड चला जाता था। 1800 में दुनिया के कुल औद्योगिक उत्पादन में भारत का हिस्सा 25 प्रतिशत था, 1900 आते-आते 2 प्रतिशत रह गया। ढाका की मलमल, मुर्शिदाबाद की रेशम बर्बाद कर दी गईं। लगान 50 प्रतिशत तक था। 1820 में साक्षरता 3-5 प्रतिशत थी। लड़कियों की शिक्षा 0.1 प्रतिशत से भी कम। 1 लाख आबादी पर 1 डॉक्टर नहीं था। सती प्रथा, बाल-विवाह, छुआछूत - विज्ञान के अभाव में धर्म की आड़ में सब चलता था। औसत आयु 24 साल। 1000 में से 250 बच्चे 1 साल के अंदर मर जाते थे।

तब रोटी, कपड़ा, मकान तीनों का अकाल था:-

-1. भोजन यानी रोटी:- खेती 100 प्रतिशत मानसून के भरोसे थी। न नहर, न ट्ययूबवेल, न यूरिया। 1 बीघा में आज जितना गेहूँ होता है, उसका 1/4 भी नहीं होता था। नतीजा - हर 5-7 साल में बड़ा अकाल। 1770 का बंगाल अकाल, 1837 का आगरा अकाल, 1866 का उड़ीसा अकाल - हर बार 10-30 लाख लोग भूख से मरे।

-2. वस्त्र यानी कपड़ा:- कपड़ा सिर्फ हथकरघा से बनता था। 1 धोती बुनने में 15 दिन लगते थे। 1854 में पहली कपड़ा मिल लगी। तब तक आम आदमी के पास 2 जोड़ी कपड़े ही होते थे।

-3. आवास यानी मकान:- 95 प्रतिशत जनता कच्चे घरों में रहती थी। पक्के मकान सिर्फ राजा, सेठ-साहूकार के थे। हैजा, प्लेग से पूरा गाँव साफ हो जाता था।

200 साल पहले भारत 'सोने की चिड़िया' सिर्फ किताबों में था। असली भारत भूखा, नंगा, बीमार, अनपढ़ और गुलाम था। आज 8-लेन हाईवे, AI, मंगलयान, IIT, AIIMS है - यह मन्नत से नहीं, 200 साल की वैज्ञानिक सोच का परिणाम है।

इस वैज्ञानिक युग का सबसे बड़ा विरोधाभास धार्मिक स्थलों पर दिखता है। मंदिर, मस्जिद, दरगाह में CCTV, AC ऑनलाइन दान, फायर-सेफ्टी है, पर भगदड़ में श्रद्धालु मरते हैं। जोधपुर चामुंडा मंदिर में 2008 में 224 लोग कुचल कर मरे। वैष्णो देवी, सबरीमाला, कुंभ, हज में यही होता है। बचाने ञ्उंइ, डॉक्टर, पुलिस आते हैं - यानी विज्ञान और व्यवस्था से लैस इंसान। इसलिए आस्था के नाम पर भीड़-प्रबंधन और जवाबदेही तय हो।

Pew Research बताता है कि आज 1.2 अरब लोग 'Nones' हैं - नास्तिक या 'कोई धर्म नहीं'। चीन में 52 प्रतिशत, यूरोप में 30-40 प्रतिशत लोग बिना धर्म के सुख-शांति से जी रहे हैं। स्कैंडिनेविया के 'नास्तिक देश' सबसे कम भ्रष्ट, सबसे ज्यादा खुशहाल हैं। नैतिकता के लिए डर नहीं, विवेक चाहिए। 2050 तक धार्मिक लोग 87 प्रतिशत रह जांएगे, पर Nones भी 1.4 अरब हो जाएँगे। धर्म मिटेगा नहीं, रूप बदलेगा।

अब समस्या यह है कि अगले 20 सालों में यह संसार एक मानव समाज में बदल जाए के लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जावे? इस हेतु हमें बच्चों को उनके मूल स्वरूप मानव के रूप में विकसित होने का वातावरण दिया जावे तभी महोपनिषद का यह उद्घोष चरितार्थ होगा - "वसुधैव कुटुम्बकम्" अर्थात पूरी पृथ्वी ही एक परिवार है-। चार सूत्र हैं: 1. शिक्षा - न्यूटन भी पढ़ाओ, कबीर भी। 2. धर्म निजी रखो। 3. पेट की गारंटी - भूखा बाबा के पास जाएगा ही। 4. अंबेडकर का रास्ता - शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो।

घर सबसे बड़ी प्रयोगशाला है। शिशु को जन्म से ही सत्य, करुणा, तर्क, श्रम का सम्मान मिले। बच्चे के सामने जाति-धर्म की बात न हो। जो बीज घर में बोया जाएगा, वही समाज में पेड़ बनेगा।

कोरोना ने दिखाया कि अंतिम समय में न अवतार आया, न पैगंबर। डॉक्टर, नर्स, सफाईकर्मी आए। वही असली हनुमान-दुर्गा थे। 'मानव धर्म के उद्धार' का मतलब है - आदमी को आदमी से जोड़ना। बुद्ध ने कहा: -अप्प दीपो भव- - अपना दीपक खुद बनो। भगत सिंह ने कहा: -इंसान को इंसान से मिलने दो-। कबीर का दोहा याद रखें: -"पानी केरा बुदबुदा, यह मानुष की जात। एक दिन छिप जाएंगे, ज्यों तारे प्रभात।।"- जीवन क्षणभंगुर है। नफरत में समय बर्बाद मत करो।

अत: कृतसंकल्प हो जाओ कि बच्चों को हिंदू-मुस्लिम बाद में, पहले इंसान बनाएँगे। सवामणी की जगह स्कूल, चढ़ावे की जगह अस्पताल माँगेंगे। जब तक आखिरी इंसान भूखा है, कोई ईश्वर खुश नहीं हो सकता।

मानव ही धर्म है। कर्म ही पूजा है। विज्ञान ही साधन है। करुणा ही मंजिल है।

इसी को 'मानव धर्म' कहते हैं। इसी के उद्धार के लिए हम सब कृतसंकल्प हों।

–मदन सिंह काला,
सेवानिवृत्त आई.ए.एस

राजस्थान में साक्षरता की धीमी रफ्तार : सिक्किम भी हुआ सम्पूर्ण साक्षर

राजेन्द्र जोशी

वर्ष 1988 में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की शुरुआत के साथ देश में साक्षरता आंदोलन ने एक जनांदोलन का स्वरूप ग्रहण किया था। इसका उद्देश्य केवल पढ़ना-लिखना सिखाना नहीं था, बल्कि समाज में जागरूकता, आत्मविश्वास और सामाजिक परिवर्तन की चेतना विकसित करना भी था। राजस्थान में भी यह अभियान व्यापक स्तर पर संचालित हुआ। सरकार, समाज, स्वयंसेवी संस्थाओं, शिक्षाविदों तथा लाखों साक्षरता कार्यकर्ताओं के संयुक्त प्रयासों से गांव-ढाणी तक साक्षरता का संदेश पहुंचा। परिणामस्वरूप प्रदेश ने विशेषकर 1991 से 2011 के बीच साक्षरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की और महिला साक्षरता में भी ऐतिहासिक वृद्धि हुई।

राजस्थान एक समय देश के सबसे कम साक्षर राज्यों में गिना जाता था। साक्षरता अभियान के दौरान जिस प्रकार सामाजिक सहभागिता विकसित हुई, उसने शिक्षा के प्रति जनमानस का दृष्टिकोण बदला। गांवों में साक्षरता केंद्र खुले, स्वयंसेवकों ने घर-घर संपर्क किया और बड़ी संख्या में प्रौढ़ शिक्षार्थी शिक्षा से जुड़े।

इस दौर में साक्षरता केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं रही, बल्कि सामाजिक चेतना का माध्यम बन गई। साक्षरता अभियान की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि इसने महिलाओं को शिक्षा से जोड़ने का कार्य किया। अनेक जिलों में महिलाएं पहली बार शिक्षा के दायरे में आईं। उन्होंने न केवल पढ़ना-लिखना सीखा बल्कि अपने अधिकारों, स्वास्थ्य, स्वच्छता, परिवार कल्याण और सामाजिक विकास से जुड़े मुद्दों पर भी जागरूकता प्राप्त की। यही कारण रहा कि 1991 से 2011 के बीच राजस्थान की महिला साक्षरता दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इस अवधि में प्रदेश की कुल साक्षरता दर में भी तेजी से सुधार हुआ और इसे साक्षरता के क्षेत्र में 'क्वांटम जंप' के रूप में देखा गया।

राजस्थान की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यहां स्वतंत्र साक्षरता निदेशालय स्थापित है। प्रत्येक जिले में साक्षरता से संबंधित स्वतंत्र व्यवस्थाएं मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त प्रदेश में अनुभवी शिक्षाविद, संदर्भ व्यक्ति, कला जत्थे, स्वयंसेवी संगठन तथा प्रौढ़ शिक्षा से जुड़े सैकड़ों कार्यकर्ता उपलब्ध हैं। इसके बावजूद वर्तमान स्थिति चिंता का विषय है। देश की औसत साक्षरता दर लगभग 80.9 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है, जबकि राजस्थान की साक्षरता दर लगभग 75.8 प्रतिशत के आसपास बनी हुई है। यह अंतर केवल आंकड़ों का नहीं है, बल्कि यह दर्शाता है कि प्रदेश अपनी संभावनाओं के अनुरूप प्रगति नहीं कर पा रहा है। विशेष चिंता की बात यह है कि राजस्थान आज भी साक्षरता के मामले में देश के पिछड़े राज्यों में शामिल है। प्रश्न यह उठता है कि जब संसाधन, संस्थागत व्यवस्था और अनुभव उपलब्ध हैं, तो अपेक्षित परिणाम क्यों नहीं मिल रहे हैं?

इस स्थिति का एक प्रमुख कारण साक्षरता कार्यक्रमों का जनांदोलन स्वरूप खो देना है। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के शुरुआती वर्षों में सामाजिक सहभागिता इसकी सबसे बड़ी ताकत थी। गांवों में शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता, युवा और स्वयंसेवी संस्थाएं मिलकर अभियान चलाते थे। समय के साथ यह अभियान अधिकतर सरकारी कार्यक्रम बनकर रह गया। समाज की सक्रिय भागीदारी घटने लगी और साक्षरता कार्यों में जनउत्साह कम होता गया। किसी भी सामाजिक अभियान की सफलता केवल प्रशासनिक प्रयासों से संभव नहीं होती, उसके लिए व्यापक सामाजिक सहयोग आवश्यक होता है। दूसरा महत्वपूर्ण कारण प्रौढ़ शिक्षा पर अपेक्षित ध्यान न दिया जाना है। वर्तमान समय में प्रौढ़ शिक्षा को नई तकनीक, डिजिटल साधनों और स्थानीय आवश्यकताओं के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। महिला साक्षरता भी अभी चुनौती बनी हुई है। सामाजिक और आर्थिक कारणों से अनेक महिलाएं शिक्षा से वंचित रह जाती हैं। महिला साक्षरता में वृद्धि किए बिना प्रदेश की कुल साक्षरता दर को राष्ट्रीय औसत से ऊपर ले जाना कठिन होगा।

प्रदेश के दूरस्थ रेगिस्तानी और आदिवासी क्षेत्रों में भी विशेष प्रयासों की आवश्यकता है। स्थानीय भाषा, लोक संस्कृति और सामुदायिक सहभागिता को साक्षरता कार्यक्रमों से जोड़कर बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। साक्षरता निदेशालय और जिला स्तर की व्यवस्थाओं को भी परिणाम आधारित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। केवल योजनाओं का संचालन पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके प्रभाव का नियमित मूल्यांकन भी आवश्यक है। प्रत्येक जिले के लिए स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित किए जाएं और उनकी समयबद्ध समीक्षा हो। साथ ही शिक्षाविदों, स्वयंसेवी संस्थाओं और अनुभवी साक्षरता कार्यकर्ताओं को पुन: सक्रिय भूमिका में लाया जाए।

आज जब देश के कई राज्य पूर्ण साक्षरता की दिशा में सफलता प्राप्त कर चुके हैं और हाल ही में सिक्किम ने भी पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य हासिल किया है, तब राजस्थान के लिए आत्ममंथन का समय है। प्रदेश के पास संसाधनों की कमी नहीं है, आवश्यकता केवल मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति, प्रभावी प्रशासनिक नेतृत्व और व्यापक सामाजिक भागीदारी की है। यदि साक्षरता को पुन: जनांदोलन का स्वरूप दिया जाए, प्रौढ़ शिक्षा को नई ऊर्जा प्रदान की जाए तथा महिलाओं और वंचित वर्गों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जाए, तो राजस्थान भी साक्षरता के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकता है।

साक्षरता केवल आंकड़ों की वृद्धि नहीं है, बल्कि यह सामाजिक विकास, आर्थिक सशक्तिकरण और लोकतांत्रिक चेतना की आधारशिला है। राजस्थान ने अतीत में यह सिद्ध किया है कि सामूहिक प्रयासों से असंभव प्रतीत होने वाले लक्ष्य भी प्राप्त किए जा सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि साक्षरता के उस स्वर्णिम आंदोलन की भावना को पुनर्जीवित किया जाए, जिसने कभी गांव-ढाणी तक जागरूकता की नई रोशनी पहुंचाई थी। यदि ऐसा किया गया तो वह दिन दूर नहीं जब राजस्थान भी देश के अग्रणी साक्षर राज्यों की श्रेणी में सम्मानपूर्वक स्थान प्राप्त करेगा।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद-साहित्यकार।

राशिफल मंगलवार 2 जून, 2026

पंडित अनिल शर्मा

द्वितीय ज्येष्ठ मास (अधिक), कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2083, मूल नक्षत्र रात्रि 10:06 तक, साध्य योग प्रात: 7:16 तक, तैतिल करण प्रात: 5:50 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मेष, बुध-मिथुन, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज राजयोग रात्रि 10:06 से आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:01 से 10:43 तक, लाभ अमृत 10:43 से 2:07 तक, शुभ 3:49 से 5:30 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:12

मेष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। उचित सफलता मिल सकती है।

सिंह
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आज परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नवीन कारोबारी अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

धनु
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ
आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।

मीन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य आज शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।